

मेरी रचना कितनी सुन्दर

REC Tabeenah Anjum is presenting

UNICEF 1 PowerPoint

1877

First Action Photos

English photographer Eadweard Muybridge, using new emulsions that allow nearly instantaneous photography, begins taking photograph sequences that capture animals and humans in motion. His 1878 photo series of a galloping horse, created with 12 cameras each outfitted with a trip wire, helps settle a disagreement over whether at any time in a horse's gait all four hooves leave the ground. (They do.) It also causes a popular stir about the potential of cameras to study movement. Muybridge goes on to create hundreds of image sequences with humans and animals as subjects. These photo series are linked to the earliest beginnings of cinematography.

Tabeenah Anjum

sangeeta dadhich

D

Dasham Rajasthan

Mahesh Chand

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

मार्गदर्शन एवं परिकल्पना :

अंकुश सिंह, यूनिसेफ, राजस्थान
विजय गोयल, आर.आई.एच.आर.
मनीष सिंह, मंजरी संस्थान, बूंदी

डॉ तबीनाह अंजुम कुरैशी (आउटलुक पत्रिका की सीनियर जर्नलिस्ट)
संदर्भ व्यक्ति व मुख्य प्रशिक्षक

संपादक :

कामिनी शुक्ला
मुख्य कार्यकारी अधिकारी, स्माईल, जयपुर

सहयोग :

तरुणा – स्नेह आंगन
कौमुदी – दशम एलाइंस
इन्दिरा पंचोली – एम.जे.वी.एस., अजमेर
सुशीला ओझा – उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू
योगेश वैष्णव – विकल्प संस्थान, उदयपुर

विश्लेषण एवं लेखन :

कौमुदी – दशम एलाइंस
तरुणा – स्नेह आंगन
(विभिन्न संस्थाओं के बच्चे)

प्रकाशन :

दशम एलाइंस के द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से
आर.आई.एच.आर.के माध्यम से प्रसारित

ग्राफिक डिजाईनर :

आयुष कम्प्यूटर्स एण्ड टाइपिंग इस्टिट्यूट, जयपुर

📞 9414941489, 8890870215




भूमिका

बीते दो सत्रों से जहाँ स्कूलों में विरानगी सी छा रही है, स्कूल टकटकी निगाहों से बच्चों के आने का इन्तजार कर रहे हैं वहीं बच्चे भी अब घरों में अपने आपको बंधक महसूस कर रहे हैं। कोरोना महामारी के कारण प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में बुरा प्रभाव पड़ा है। लोगों को आर्थिक, सामाजिक व मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। उस दौरान महिलाओं व बच्चों के साथ घरेलू हिंसा, शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न जैसी कई घटनायें बड़ी हैं। बच्चों के साथ घर में ऑनलाइन शिक्षण का दबाव रहा है बच्चे घण्टों मोबाइल व अन्य उपलब्ध साधनों के साथ शिक्षा ग्रहण करने का प्रयास करते रहे हैं। इस कठिन समय में बच्चों के पास घर के अन्दर रह कर कोई और विकल्प नहीं था, जिससे वह अपने आप को व्यस्त रख सकें।

इस सभी के चलते दशम एलाइंस ने अपने सहयोगी संस्थाओं के साथ चर्चा कर तय किया कि बच्चों के साथ ऑनलाइन के माध्यम से रचनात्मक कार्य कराया जाये जिसमें बच्चे कुछ अलग करने व सीखने का प्रयास कर सकें। इसी को ध्यान में रखते हुए निर्णय लिया गया कि बच्चें अपने वर्तमान में कोविड 19 के दौरान हुए अच्छे-बुरे अनुभवों को लिखें व मोबाइल के माध्यम से रचनात्मक फोटोग्राफी सीखने का प्रयास करें। यूनिसेफ की सहायता से आउटलुक पत्रिका की सीनियर जर्नलिस्ट डॉ. तबीनाह अंजुम कुरैशी के द्वारा बच्चों के साथ कार्यशालाओं को आयोजित करने की योजना बनाई गई।





डॉ. अंजुम के साथ चर्चा कर तय किया गया कि बच्चों के साथ 5 दिन की कार्यशाला आयोजित की जाये जिसमें उनको ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से रचनात्मक लेखन व मोबाइल के माध्यम से फोटोग्राफी, स्टोरी राइटिंग की समझ व जानकारी दी जाये तथा उनको लिखने के लिए प्रेरित किया जाये। यूनिसेफ के सहयोग से तय किया गया कि बच्चों के साथ कम से कम 5 कार्यशालाएं आयोजित की जायें।

इन 5 दिवसीय कार्यशालाओं को आयोजित करने का मूल उद्देश्य बच्चों में कुछ अलग सीखने व लिखने की इच्छा जागृत करना है।

इसी क्रम में 26 मई से 31 मई तक पहली कार्यशाला आयोजित की गई। इस अंक में पहली कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा लिखी गई कहानी व कविताएं तथा फोटोग्राफ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

“जब टूटने लगे हींसले तो बीते दिनों की जीत याद रखना

गुज़र चुकी वो रातें अब अगली सुबह याद रखना”



सम्पादक की कलम से

दशम एलाइंस ने अपनी सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर यूनिसेफ के सहयोग से दिनांक 26 मई 2021 से 15 जुलाई 2021 तक फोटोग्राफी एवं रचनात्मक लेखन की कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला में संस्थाओं से जुड़े हुए वंचित समुदाय के बच्चों ने भाग लिया।

कार्यशाला में संदर्भ व्यक्ति के रूप में सुश्री तबीनाह जो कि एक जानी मानी लेखिका हैं, वे पूरे समय बच्चों के साथ रहीं। इस तरह की कार्यशालाएं 5 आयोजित की गईं। प्रत्येक कार्यशाला 5 दिवसीय रही। इस कार्यशाला की विशेषता यह रही कि इसमें प्रत्येक क्षेत्र, वर्ग, जाति एवं समुदाय के बच्चों ने भाग लिया। उक्त पांच दिनों में बच्चों ने बहुत ही लगन व उत्साह से भाग लिया। कार्यशाला के दौरान बच्चों ने अपनी रचनात्मकता में निखार लाते हुए बहुत सुंदर कहानियां व कविताएं लिखीं। इनमें से कुछ कविताएं और कहानियां इस अंक में शामिल की गई हैं।

लेखन के साथ ही बच्चों ने फोटोग्राफी की बारीकियां भी सीखीं। इसी अंक में बच्चों द्वारा खींची गई कुछ तस्वीरें भी दी गई हैं। उम्मीद है आप बच्चों का मनोबल बढ़ाएंगे।

कामिनी शुक्ला
मुख्य कार्यकारी अधिकारी
स्माईल, जयपुर

कार्यशाला एक नज़र में

कोरोना काल के चलते जहां बच्चे एक ओर स्कूली शिक्षा से वंचित रहे वहीं यूनिसेफ और दशम एलाइंस के साथियों की एक राय के बाद डॉ तबीनाह अंजुम के सुझाव पर फोटोग्राफी व चित्र लेखन की पांच दिवसीय कार्यशालाएं प्रस्तावित की गयी। इन कार्यशालाओं के माध्यम से बच्चों को मूलरूप से फोटोग्राफी व चित्र लेखन पर कार्य कराया गया

सुश्री तबीनाह द्वारा इन पांच दिनों की कार्यशाला के दौरान बच्चों को तस्वीरों से कहानी बनाना, तस्वीरें लेना, और तस्वीर में अलग अलग प्रकारों को दिखाना, फोटोग्राफी का इतिहास, कैमरा एवं उसके बुनियादी भाग, कैमरा उपयोग करने के तरीकों के बारे में बताया गया। प्रकाश, साइड लाइट, बैक लाइट, लिडिंग लाइन, पैटर्न, तिहाई का नियम का उपयोग कर तस्वीरों को रोचक बनाना आदि बताया गया। कार्यशाला में 17 जिलों के 22 संस्थाओं के 187 बच्चों ने अपनी पूर्ण रूप से भागीदारी रखी। कार्यशाला में सिखाये गये तरीकों को बच्चों ने बखूबी अपनी कविता, कहानीयों और तस्वीरों के माध्यम से दिखाया।

5 दिवसीय कार्यशाला को बच्चों द्वारा खूब सराहा गया। डॉ तबीनाह अंजुम द्वारा फोटोग्राफी और लेखन की कार्यशाला को बड़े सरल और सहज रूप से सम्पन्न कराया गया।



कौमुदी – दशम एलाइंस



विषय सूची

वो एक लड़की हर घर में होती है.....	1
स्कूल के बिना जीवन कैसा है?.....	2
बचपन भी एक जमाना था.....	4
दादी की कहानी.....	5
मैं आशियाना ढूँढता हूँ.....	8
मानवता का मूल्य.....	9
सवेरा.....	13
एक नई दिशा.....	14
मुझे भी कुछ करके दिखाना है.....	17
शिक्षा की लगन.....	18
मेरे प्यारे पापा.....	20
प्यारी सहेलियाँ.....	22
Lockdown taught Neeta doodle dance and Sketching.....	23
दुनिया हँसती है.....	25
कोरोना के दौरान बच्चों के जीवन में सकारात्मक अनुभव.....	27
कोरोना के दौरान बच्चों के जीवन में नकारात्मक अनुभव.....	28
कार्यशाला से जुड़ी सहयोगी संस्थाओं का परिचय.....	29
प्रतिभागी बच्चों के नामों की सूची.....	31



वो एक लड़की हर घर में होती है



जहन से उसके ये ख्याल नहीं जाता,

क्यों उसे इस दुनिया में पिता का कर्ज बताया जाता।

किसी अजनबी को अपनाने से वो ख़ौफ़ज़दा हो जाती, वो चीखती और, गिड़गिड़ाती।

फिर कभी न हारने वाली लड़की, पिता की इज़ज़त की सौगन्ध पर घुटने टेक जाती।

एक वही चीज़ है हर लड़की, जो हर हालातों से अक्सर समझौता कर जाती।

दरीचों के साये से जो राहें आज़ादी की ताकती है।

वो एक लड़की हर घर में होती है,

वो सोचती है खुद में, मुझे अकेला देख जो हाथ उनके बेशर्मी से मेरी ओर बढ़ते हैं।

फिर वही लोग चुप करा के हया की चादर में, मुझे घूँघट करने को क्यों कहते हैं ?

क्यों सड़कों पर अजनबी चेहरा मुझे घूरता चला जाता है,

उसके तसव्वुर में बारम-बार, ये खलिश रह जाती है।

“वो सोचती है खुद में, हद में, क्यों उसे हर मर्द से खौफ कराया जाता है?

और अगर इस ख्याल से इनकार करे तो, निर्भया को याद दिलाया जाता है।

वो एक लड़की हर घर में होती है।।

मेहर, कक्षा 12, उम्र 16 वर्ष



स्कूल के बिना जीवन कैसा है?

रंजीता रोजाना सुबह नहा-धोकर अपनी मम्मी से दो चोटी बनवा कर और पूजा कर स्कूल के लिए तैयार होती थी। उसके बाद वह अपना स्कूल बैग जमाती, नाश्ता करती और उसकी मम्मी टिफिन तैयार करके उसे देती थी, रंजीता स्कूल बैग लेकर अपनी साइकिल से रोज स्कूल जाया करती थी। देर ना हो जाए इसलिए वह जल्दी-जल्दी घर से निकल जाती और कभी टिफिन घर पर ही भूल जाती तब उसके पापा उसे स्कूल में टिफिन देने आते थे।



रंजीता जब स्कूल जाती तब वह रास्ते में वाहनों को आते-जाते देखती, लोगों को इधर से उधर जाते,वाँक करते और जूस निकालने वाले ठैले के पास खडे लोगो को जूस पीते हुए देखती। इस प्रकार रंजीता अपने स्कूल पहुंच जाती थी।

जहां वह अपने दोस्तों से मिलती उनसे बातें करती और आगे बैठने के लिए वह जिद करती और हमेशा आगे बैठती थी। लंच में रंजीता अपने दोस्तों के साथ खेलती और एक दूसरे से सवाल भी पूछा करती थी।

रंजीता जब अपनी दोस्त सोनम से कहती की चलो खेलते हैं तो वह कहती कि मुझे भागना नहीं आता, मैं नहीं खेल रही, फिर भी रंजीता और उसकी सहेली उसे खेलने के लिए राजी कर लेती थी और फिर वे सब खेलतीं और मस्ती किया करती थीं।

छुट्टी के समय वह अपनी साइकिल से घर आ जाती थी। कभी-कभी उसे रास्ते में अपने दोस्त भी मिल जाते थे तब वह उनके साथ बातें करती हुई घर जाती थी और उसे पता भी नहीं चलता कि वह कब घर पहुंच गए।

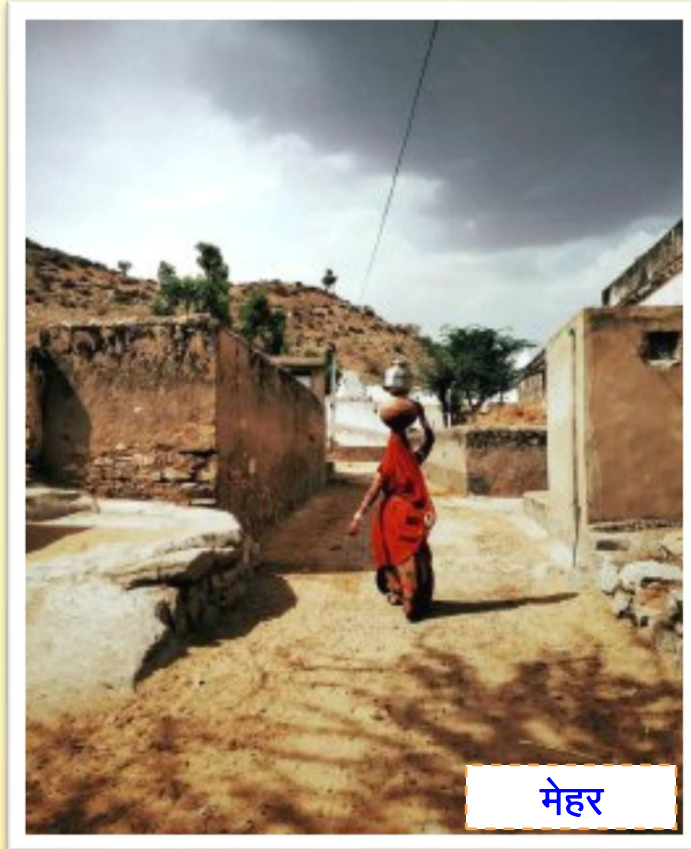
(उसी दौरान कोरोना महामारी के कारण सम्पूर्ण देश में लॉकडाउन लग चुका था)

जिस कारण रंजीता अपने स्कूल नहीं जा पा रही। रंजीता बहुत उदास रहती है और उसे अपने दोस्तों की, उन सवालियों को जो वे एक-दूसरे से पूछती थी और स्कूल की भी बहुत याद आती है। रंजीता अब सोचती है कि कब ये महामारी खत्म हो और कब स्कूल खुलें, अपने दोस्तों से मिलें।

✍ संजीता प्रजापत, कक्षा 10, उम्र 15 वर्ष



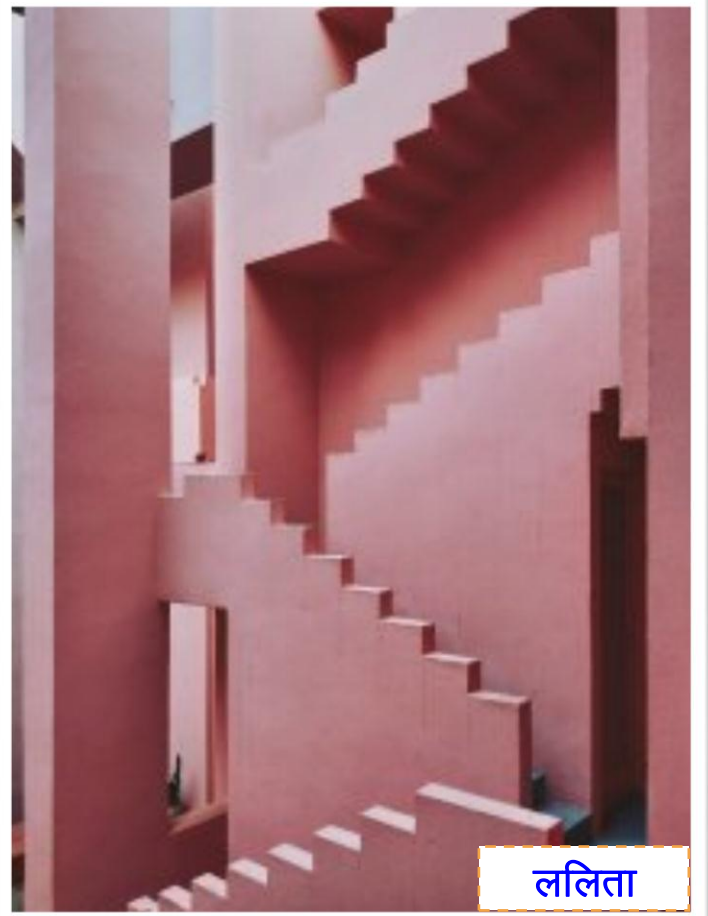
कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा खींची गई तस्वीरें



मेहर



ललिता



ललिता



बचपन भी एक जमाना था

एक बचपन का जमाना था, जहाँ खुशियों का खजाना था।
चिंता नाम का जिक्र न था, जीवन अपना आशियाना था।
दिन भर गोद में रहने की चाहत थी, वो पल भी कितना सुहाना था।

चाहत चाँद को पाने की थी, पर दिल तितली का दिवाना था।

खबर न थी सुबह की, न शाम का ठिकाना था।

उन रेत के ढेरों से सुन्दर-आशियां बनाना, वो दोस्तों से झगड़ना, वो
रुठना-मनाना।

वो परीक्षा की घड़ियां थी, वो थक कर स्कूल से घर आना ।

दादी की कहानीयाँ थी, खेलने भी जाना था।

बारिश में कागज की नाव थी, हर मौसम सुहाना था।

रोने की वजह न थी, न हँसने का बहाना था।

क्यों हो गये इतने बड़े हम, जी रहे हैं लेके इतने भ्रम।

सोचता हूँ आज नहीं तो कल अपना जमाना होगा।

फिर से जिंदादिली का कोई बहाना होगा।

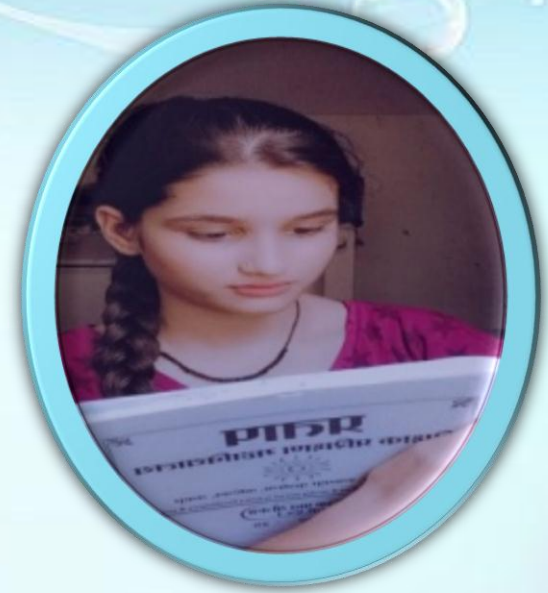
फिर से चेहरे पर खिलखिलाती हुई मुस्कान होगी,

लेकिन क्या फिर से वही जिंदगानी होगी ?

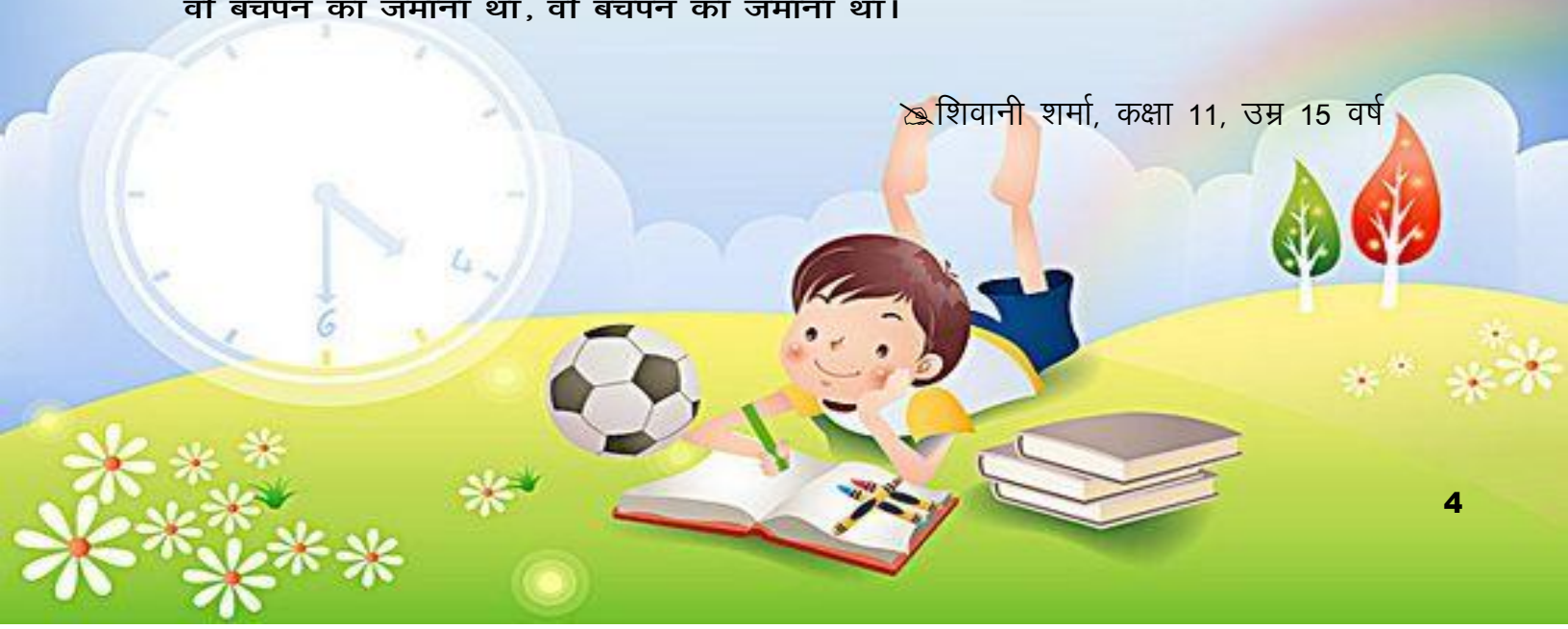
इस आधुनिकता के खेल में भी मुझे, अपने बचपन की याद आती है

वो गुजारे हुए हसीन लम्हों की यादें तरसाती है, सच में वो सबसे प्रिय अफसाना था।

वो बचपन का जमाना था, वो बचपन का जमाना था।



शिवानी शर्मा, कक्षा 11, उम्र 15 वर्ष



दादी की कहानी

चेल्सी अपनी दादी के साथ रहती थी। दादी के सिवा उसका इस दुनिया में कोई भी नहीं था। उसके माता-पिता उसे बहुत ही छोटी उम्र में छोड़कर भगवान के घर चले गये थे। इसलिए दादी ही उसके लिये सब कुछ थी और वह उनसे बहुत प्यार करती थी। वह दादी के साथ ही सोती और उन्हीं के साथ ही वह खाना खाती थी।

एक दिन चेल्सी अपनी गुड़ियों के साथ खेल रही थी। तभी अचानक से उसे कहा जाता है कि अब वह 15 दिन तक अपनी दादी से नहीं मिल सकती। चेल्सी पूछती है क्यों? क्या हुआ मेरी दादी को?

तो उसे पता चलता है कि उसकी दादी को कोरोना वायरस हो गया है। यह बात सुनते ही चेल्सी बहुत उदास हो जाती है और सोचने लगती है अब कौन मुझे सोने से पहले कहानियां सुनायेगा, मैं किसके साथ घूमने जाऊँगी, कौन मेरी सुंदर सी चोटियां बनायेगा, अब मैं किसके साथ मस्ती करूँगी और किसका चश्मा तोड़ूँगी, किसके साथ में लड़ाई करूँगी और जब आइसक्रीम वाला आयेगा तो मैं किसके पीछे गोल-गोल घूमकर कहूँगी- दादी ओ मेरी दादी! वो देखो आइसक्रीम वाला आ रहा है। प्लीज दादी मुझे भी आइसक्रीम दिलाओ ना दादी। फिर कौन मुझे कहेगा मुन्नी तुम आइसक्रीम नहीं खा सकती बेटा अभी कोरोना चल रहा है, तुम्हारी तबियत खराब हो जायेगी। ऐसी ही कुछ खट्टी मीठी यादें सोचते-सोचते वह रोने लग जाती है और उसे बहुत ही डर लगने लगता है।

वह जिस गुड़िया से खेल रही थी उसे लेकर वह घर के एक कोने में जाकर बैठ जाती है और गुड़िया से बातें करने लगती है। वह कहती है तुम्हें पता है इस दुनिया में मेरा तुम्हारे और दादी के अलावा कोई नहीं है। तुम तो मेरे साथ हो पर मेरी दादी मां नहीं क्योंकि उन्हें कोरोना हो गया है। मुझे कहा गया है कि मैं उनसे नहीं मिल सकती। मुझे बहुत ही अकेलापन महसूस हो रहा है। मेरी दादी मां स्वस्थ तो हो ही जायेगी ना गुड़िया, यह सोचते हुए चेल्सी सो जाती है।

कुछ देर बाद वह उठती है तो उसे सुनाई देता है कि उसके दरवाजे पर कोई घंटी बजा रहा है। वह दरवाजा खोलती है और देखती है कि उससे मिलने उनके पास ही में रहने वाली एक आंटी आई है। वह उन आंटी को अंदर बुलाती है। वह आंटी सबसे पहले तो चेल्सी को एक जगह बिठाकर खाना खिलाती है।





उसके बाद वे कहती है कि देखो बेटा चेल्सी तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं है, तुम्हारी दादी जल्दी ही स्वस्थ हो जायेगी। तुम ईश्वर से उनके लिये प्रार्थना करो और अपना अच्छे से ख्याल रखो। अगर तुम उदास रहोगी ना तो तुम्हारी दादी भी उदास रहेगी और तुम्हारी चिंता करेगी जिससे कि वे जल्दी स्वस्थ नहीं हो पायेगी और हम सब तुम्हारे साथ हैं। जब तक तुम्हारी दादी मां ठीक नहीं हो जाती है हम तुम्हारा ध्यान रखेंगे। आंटी की सहानुभूति भरी बातें सुनकर चेल्सी घबराना बंद कर देती है और प्रतिदिन ईश्वर से अपनी दादी के स्वस्थ होने की कामना करती है।

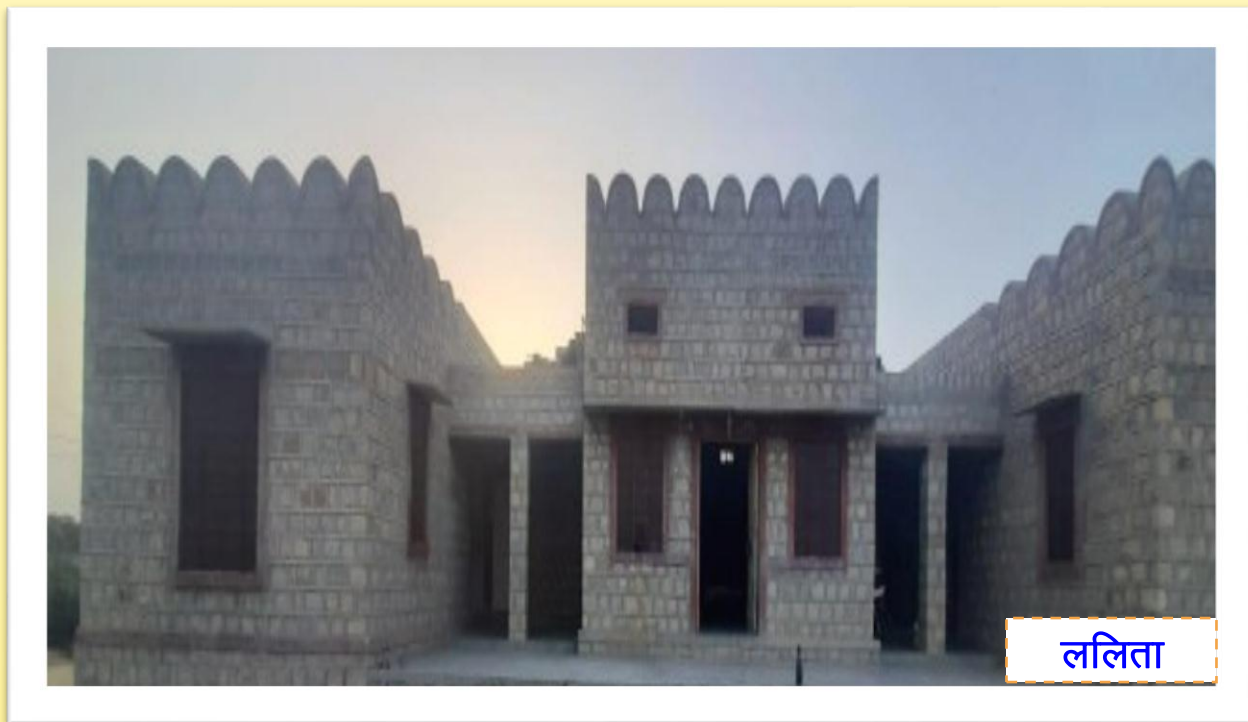
कुछ दिन बाद चेल्सी को खबर मिलती है कि उसकी दादी मां को हरा कर फिर से स्वस्थ हो गई है। यह बात सुनने के बाद चेल्सी बहुत ही खुश हो गई और फिर से अपनी दादी मां के पास चली गई और दादी से मस्ती करने लगी और खुद मीठी सी बातें करने लगी। चेल्सी ने उन्हें उन आंटी के बारे में भी बताया जिन्होंने उसकी मुश्किल समय में मदद करी थी। दादी मां ने उन आंटी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त किया और उनका शुक्रिया अदा किया।

सीख:—हम सभी को मुश्किल घड़ी में एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए।

टीना वर्मा, कक्षा 10, उम्र 15 वर्ष



कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा खींची गई तस्वीरें



मैं आशियाना ढूँढता हूँ



जीने का बहाना ढूँढता हूँ, मैं घर में ही आशियाना ढूँढता हूँ।

कद्र करे, जो मेरी दिल से सच्ची, आज तक मैं वो जमाना ढूँढता हूँ।

मुझसे ही है धरा पर मौसम बहारों का,

बिन मेरे कोई मजा नहीं जहाँ में नजारों का।

वैसे तो हूँ मैं खुद ही तरन्नुम, पर गुनगुनाने को कोई तराना ढूँढता हूँ।

मेरी वजह से ही धरा पर, ये अनोखा जीवन,

मैं भी लूँ आनंद जिंदगी का, चंचल है मेरा ये मन।

मत समझो ए जमाने वालों मुझे तुम काला टीका,

बिन मेरे तो रह जाता, हर एक तीज त्यौहार फीका।

बांटता हूँ मेहर और रूह को प्राणों की रोशनी, मैं ही लिखता सारे जग की कहानी।

जीने का बहाना ढूँढता हूँ, पर मैं जग में खुद का फसाना ढूँढता हूँ ॥

✍ पार्थ बैरवा, बी.टेक, उम्र 19 वर्ष



मानवता का मूल्य

विलासपुर नाम के एक गांव में घनश्याम नाम का वृद्ध व्यक्ति रहता था। उसके परिवार में उसके सिवा और कोई नहीं था। उसकी पत्नी का कुछ महिनो पहले ही कोरोना महामारी के कारण देहांत हो चुका था। उसके बेटे भी बहुत सालों पहले ही उसे छोड़कर विदेश चले गये थे। उसके पास खुद का मकान भी नहीं था। वह गांव में एक घास-फूस से बनी टूटी सी झोपड़ी में रहता था।

एक रात जब वह झोपड़ी में सो रहा था, जोरों से बारिश हुई तो उसने देखा कि उसकी झोपड़ी में पानी ही पानी भर गया, तेज बारिश के कारण झोपड़ी पूरी तरह बर्बाद हो गई थी। उसने यह गांव छोड़कर दूसरे गांव जाने का निश्चय किया, अगले दिन जैसे ही सुबह हुई वह दूसरे गांव की ओर चल पड़ा।

चलते-चलते बहुत धूप हो गई और सूरज उसके सिर पर आ गया था। उसका पूरा शरीर पसीने से लथपथ हो गया था। उसे बहुत तेज प्यास लग रही थी किन्तु न तो उसके पास पीने के लिए पानी था ना ही खाने के लिए भोजन।

उसने कई घरों में मदद के लिये दरवाजे भी खटखटाये किन्तु किसी ने भी उसकी मदद नहीं की। सभी से एक ही जवाब मिलता कि “अरे भाई तुम जानते नहीं हो क्या? अभी कोरोना महामारी का समय चल रहा है। पता नहीं कहां से आये हो, तुम हमें कोरोना करोगे क्या?”

चलते-चलते वह वृद्ध व्यक्ति गाँव के सेठ धनीराम के घर के बाहर पहुचा – राम राम सेठजी। मैं दूसरे गांव से इस गांव आया हूं। मुझे बहुत प्यास लगी है क्या मुझे एक लोटा जल मिलेगा।

सेठजी ने कहा थोड़ी देर रुको मैं अभी हिसाब-किताब कर रहा हूं। वृद्ध को उसकी यह बात सुनकर थोड़ी संतुष्टि महसूस हुई कि आखिर किसी ने तो उन्हें मदद के लिए हां कही।

कुछ देर बार वृद्ध व्यक्ति फिर से बोला :- सेठजी प्यास के मारे गला सूखा जा रहा है। कृपया पानी पिला दीजिए ना। सेठजी फिर बोले – थोड़ी देर और रुक जाओ मेरा काम होने ही वाला है।



इसी प्रकार वृद्ध व्यक्ति बार बार कहता रहा और सेठजी ने भी वही जवाब दिया। आखिर में वृद्ध व्यक्ति ने कहा सेठजी ओ सेठजी कृपया अब तो जल पिला दीजिए ना। प्यास के मारे मेरे प्राण निकले जा रहे हैं।

सेठजी – अच्छा। रूको में किसी आदमी को बुलाता हूं। वृद्ध ने सेठजी से कहा कुछ देर के लिए आप ही आदमी बन जाइये ना। सेठजी ने कहा अरे भाई! ये तुम क्या बोल रहे हो तुम्हें दिखता नहीं क्या? मैं तो पहले से ही आदमी हूं।

वृद्ध ने सेठजी से कहा आप केवल तन से ही आदमी हैं। अगर आप मन से भी आदमी होते तो आप इंसानियत के नाते काम छोड़कर मेरी ऐसी दशा देख पहले मुझे पानी पिलाते। सेठजी को वृद्ध की बातें सुनकर अपनी गलती का अत्यधिक पछतावा हुआ। वृद्ध व्यक्ति ने सेठजी की आंखें खोल दी।

सेठजी ने वृद्ध व्यक्ति से माफी मांगी तथा उसे सबसे पहले पानी पिलाया।

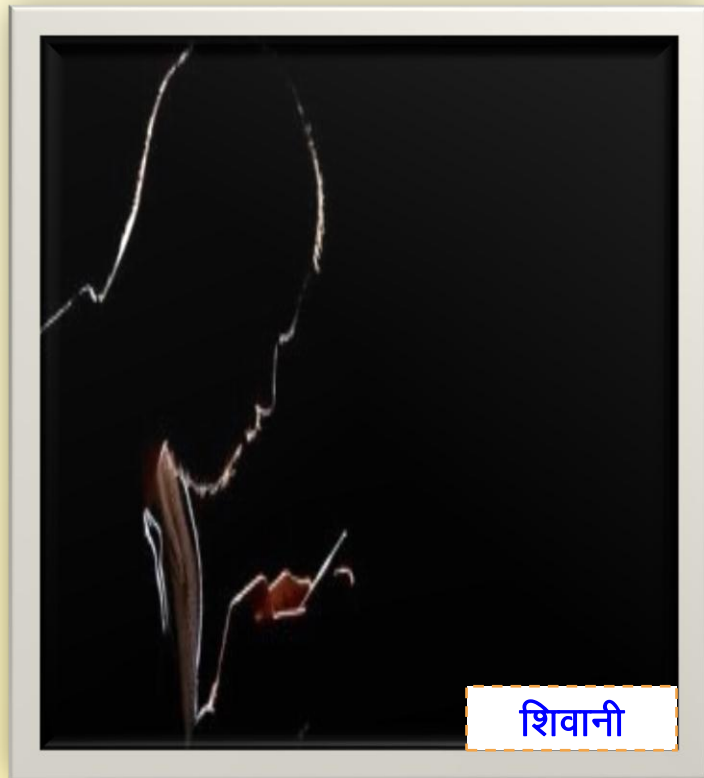
सीख – परिस्थितियां चाहे कितनी ही विकट क्यों ना हो पर हमें इंसानियत कभी नहीं छोड़नी चाहिए।



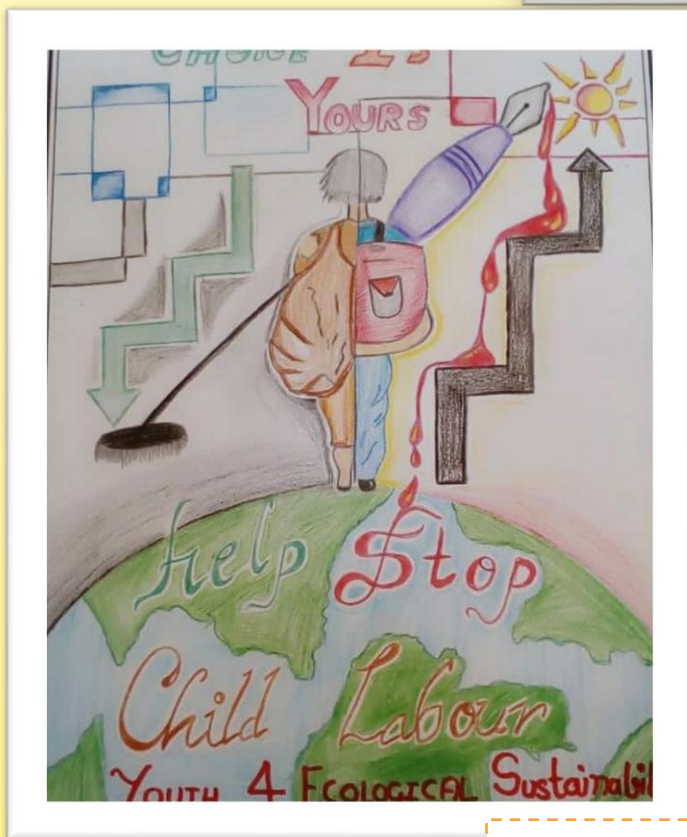
✍ गौरी सोनी, कक्षा 9, उम्र 13 वर्ष



कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा खींची गई तस्वीरें



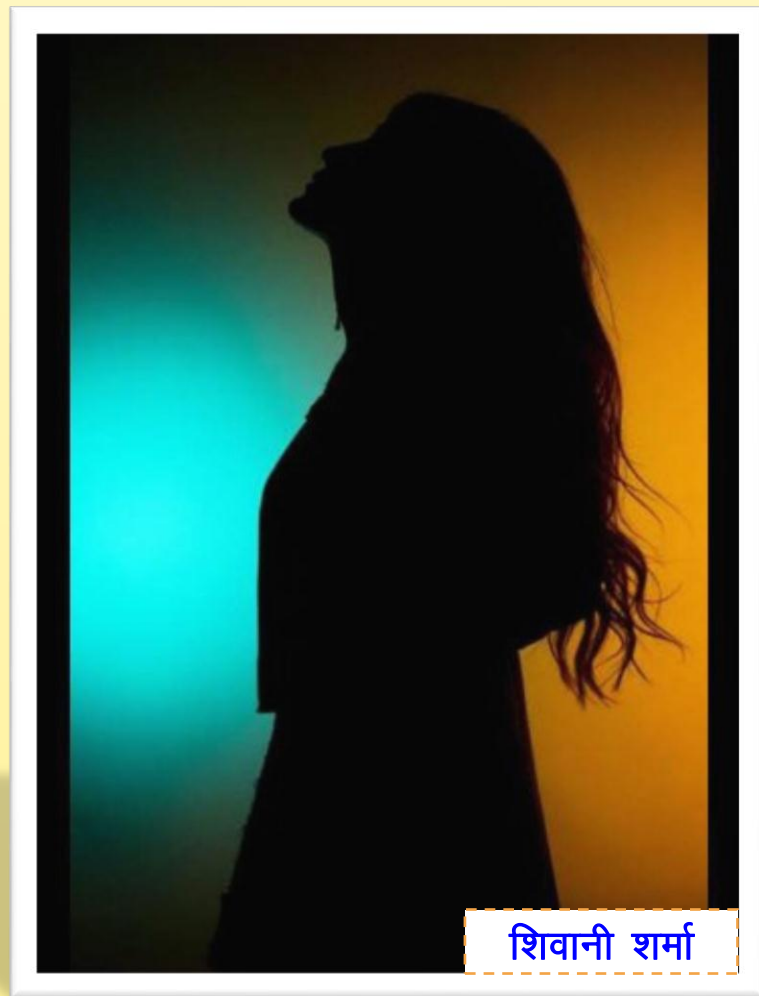
शिवानी



तनुष्का



कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा खींची गई तस्वीरें



सवेरा



सूरज की किरणें आती हैं, सारे जग को महकाती हैं।

डाली लहराती है मस्तानी, नया सवेरा नई कहानी।

देखो कैसे लहराता है पानी, ठंडी ठंडी हवा सुहानी।

नया जोश पाते सब प्राणी, सुबह मेहनत लगती है प्यारी।

अंधेरा सब खो जाता है, हमारा जग सुंदर हो जाता है।

मौसम सुनहरा हो जाता है, देखो हमारा जग सुंदर हो जाता है।

ये है ईश्वर की मेहरबानी, यही है हमारे जीवन की कहानी

सोनम कुशवाहा, कक्षा 10, उम्र 15 वर्ष



एक नई दिशा

मार्च से पहले मैं प्रतिदिन स्कूल जाता था और फिर शाम को दोस्तों के साथ क्रिकेट भी खेलता था। एक दिन अचानक टेलीविज़न, अखबार, व्हाट्सप में और धीरे-धीरे पूरे गांव में एक बिमारी के आने और लॉकडाउन लगने की ख़बर फैल गई।

गांव में सभी बुजुर्ग और बाकी लोग बिमारी के बारे में तरह तरह की बातें करने लगे, सब एक दूसरे की बातें सुन कर डरने लगे। सभी लोग बार बार हाथ धोने, एक दूसरे से दूर रहने और मुंह को ढक कर रखने की सलाह देते और दिन भर कोरोना बिमारी के बारे में चारों ओर बातें होती। दिन में आनलाइन क्लास की वजह से और शाम को न्यूज़ में लोगों के मृत्यु के आंकड़े दिल दहला देते।

सभी लोगों ने मुंह पर कपड़ा (मास्क) लगाना शुरू कर दिया और जो मास्क नहीं लगाते उन्हें घर के अन्दर भी नहीं आने देते।

कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन लग गया था तो स्कूल भी बंद हो गए और घर वाले भी दोस्तों को घर पर बुलाने के लिए मना करने लगे क्योंकि उनमें से कुछ दोस्त मास्क का उपयोग नहीं कर रहे थे। उनके घर के आस पास के पड़ोसी कोरोना संक्रमित हो गए फिर तो उनका हमारे घर पर आना बंद ही करना पड़ा इस कारण मेरा मन भी नहीं लगता था । लॉकडाउन के चलते स्कूल, खेल के मैदान, पार्क को बंद कर दिया जिस कारण खेलने नहीं जा पा रहा था और मेरे सारे खिलोने एक बैग में बंद रह गए।

इन सब के चलते मैं भी परेशान रहने लगा। और मैंने इस परेशानी को दूर करने के बारे में सोचा। इसी कारण कोरोना काल के चलते मुझे अपनी हॉबी में बदलाव करना पड़ा क्योंकि पहले मैं रोज शाम अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलता, घर से बाहर जाकर



घूमता-फिरता था। लॉकडाउन के कारण मैं अपने दोस्तों से नहीं मिल पा रहा था तब मैंने एक व्हाटसप ग्रुप बनाया और दोस्तों से क्रिकेट के बारे में व अन्य बातें किया करता। फिर मुझे लगा कि मैं इस ग्रुप के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा अपने दोस्तों को कोविड-19 के बारे में जानकारी दे सकता हूँ। मैंने अपने क्षेत्र में काम करने वाली संस्था से सम्पर्क कर कोविड के बारे में और जानकारी एकत्रित की तथा अपने ग्रुप में शेयर करने लगा- जिसमें मास्क लगाने, सामाजिक दूरी, कोरोना के लक्षण होने पर डॉक्टर के पास जाने जैसी बातें वेक्सीनेशन के लिए रजिस्ट्रेशन कराने, आदि के बारे में बताता रहता। मैंने अपने मोबाइल से कोरोना से संबंधित सही जानकारी निकाल कर अपने आस पास के और घर के लोगों को बताना शुरू कर दिया और अपना समय बिताने लगा, मैं दोस्तों के साथ नहीं खेल पाने का दर्द तो महसूस करता रहा परन्तु लोगों को समय-समय नयी-नयी जानकारियाँ देकर अपने आप को रोमांचित महसूस करने लगा। दोस्तों को मोबाइल के द्वारा क्रिकेट की जानकारी भी देता रहा जिससे उनको सीखने का मौका मिल रहा था।



✍ पार्थ बैरवा, बी.टेक, उम्र 19 वर्ष



कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा खींची गई तस्वीरें



मुझे भी कुछ कर दिखाना है



मैं हूँ एक नन्हीं-सी परी, परियों के देश में हूँ पली-बड़ी
क्यूँ रौंघ दिया है जीवन मेरा, फूल समझ कर,
नहीं घबराना है, मुझे भी कुछ करके दिखाना है।
क्यूँ बन्द किया है, मुझे इन दीवारों में,
मुझे भी आगे बढ़कर दिखाना है, देश को लड़कियों के प्रति जगाना है,
मुझे भी कुछ करके दिखाना है।
कल तक थी मैं एक नन्हीं-सी कली, आज मुझे सबको समझाना है
ना समझो बेटियों को कमजोर, यह पाठ सबको पढ़ाना है
मुझे भी कुछ करके दिखाना है।
मुझे भी शिक्षा का अधिकार है, यूँ ना छीनों मुझसे ये अधिकार
दोस्तों को बराबर का दर्जा दिलाना है, सब तक यह बात पहुंचानी है
मुझे भी कुछ करके दिखाना है।
मुझे भी कुछ करके दिखाना है।।

टीना वर्मा, कक्षा 10, उम्र 15 वर्ष



शिक्षा की लगन

सीमा एक ऐसे गांव में रहती है जहां गांव में लड़कियों को पढ़ने की इजाजत नहीं है। सीमा रात और दिन अपनी मां को बोलती है कि मां हमारे गांव में सभी लड़के पढ़ने के लिए स्कूल जाते हैं किंतु लड़कियों को क्यों नहीं भेजते इसलिए वह घर में ही पढ़ाई करती है। स्कूल की किताबें और पढ़ने की इच्छा को लेकर वह एक पेड़ के नीचे बैठ जाती है।

उसकी मां उसकी पढ़ने की लगन को देखकर सीमा के पापा को कहती है कि क्यों ना हम अपनी बच्ची को स्कूल भेजें ताकि वह पढ़ लिखकर कुछ बन सके। इस कोरोना काल में हमारे पास कुछ नहीं था हम पढ़े-लिखे नहीं थे अगर हम पढ़े-लिखे होते हमारे पास भी नौकरी होती हमें किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं होती इसलिए हमें अपनी बेटी को बढ़ाना चाहिए ताकि वह पढ़ लिख कर नौकरी करे और हमारा नाम रोशन करे आगे बढ़े।

इसके बाद सीमा के पापा को एहसास होता है कि उसे अपनी बेटी को पढ़ाना चाहिए। इसलिए वह अपनी बेटी को स्कूल भेजने के लिए तैयार हो जाते हैं। सीमा ये सुनते ही खुशी से झूम उठती है और सुबह होने का बेसब्री से इंतजार करती है। वह पूरी रात जाग कर अपना बैग जमाने, किताबों को रखने लग जाती है खुद ही जल्दी जल्दी स्कूल जाने के लिए तैयार हो जाती है और अपनी मां से दो चोटी बनवाकर अपने घर से खुशी खुशी निकल जाती है।

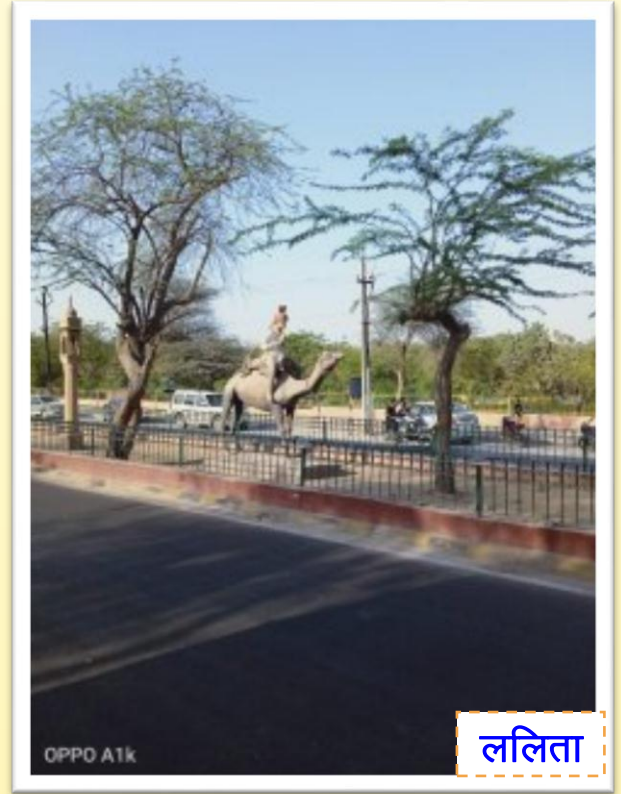
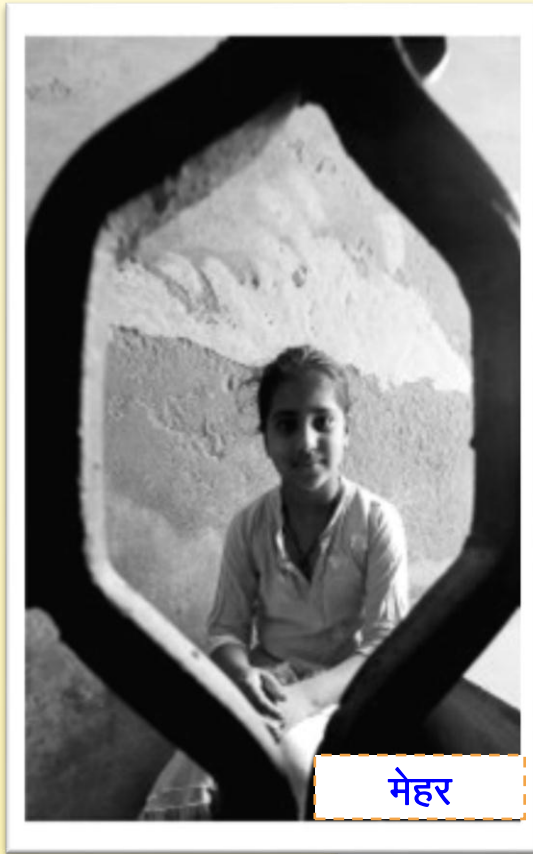


इस तस्वीर में सीमा स्कूल जा रही है और बहुत खुश दिखाई दे रही है।

✍ ललिता, कक्षा 10, उम्र 15 वर्ष



कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा खींची गई तस्वीरें



मेरे प्यारे पापा

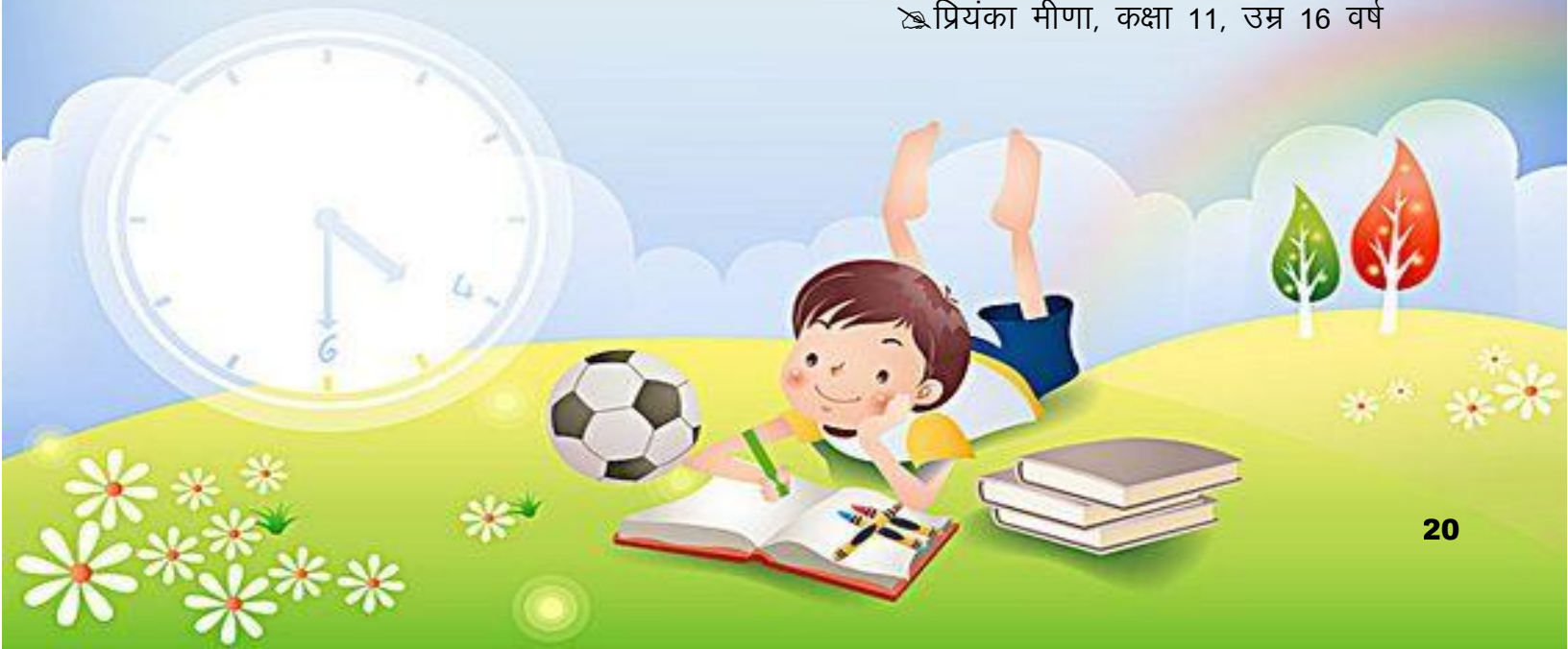


प्यारे पापा सच्चे पापा, बच्चे के संग बच्चे पापा
करते हैं पूरी हर इच्छा, मेरे सबसे प्यारे पापा

पापा ने ही तो सिखलाया, हर मुश्किल में बन कर साया
जीवन जीना क्या होता है, जब दुनिया में कोई आया
जब पहला कदम भी नहीं आया, अंगुली को पकड़ कर सिखलाया
नन्हे प्यारे बच्चे के लिए, पापा ही सहारा बन जाते

जीवन के सुख-दुख को सहकर पापा की छाया में रहकर
बच्चे कब हो जाते हैं बड़े यह भेद नहीं कोई कह पाया
दिन रात जो पापा करते हैं बच्चों की खुशियों के लिये
अपनी खुशियों को हरते हैं
मेरे प्यारे पापा

प्रियंका मीणा, कक्षा 11, उम्र 16 वर्ष



कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा खींची गई तस्वीरें



प्यारी सहेलियां



है रंग बिरंगी कुछ तितलियां, वह है मेरी प्यारी सहेलियां,

है हमारा रिश्ता कुछ ऐसा खास, बिन कहे समझ जाती हैं कि मैं हूँ उदास

सुगंध से भरी है जो कलियां, है वह मेरी प्यारी सहेलियां।।

देती है हमेशा मेरा साथ, थामें रखती है हाथों में मेरा हाथ
है ऊंचा उड़ने कि उनमें चाह, दिखाती है हमेशा मुझे सही राह
है मुझे तुम सब पर नाज, मिलकर बनाएंगे हम नया समाज
देती है मुझे अनोखी खुशियां, है वह मेरी प्यारी सहेलियां।।

करनी है हमें ऊंचे शिखरों पर चढ़ाई, चाहे आ जाए कितनी ही कठिनाई,
तुम सब हो मेरी प्यारी बहना, तुम सब का क्या ही है कहना,
हौसले से भरा है जिनका नज़रिया, है वह मेरी प्यारी सहेलियां।।

गौरी सोनी, कक्षा 9, उम्र 13 वर्ष



Lockdown Taught Neeta Doodle Dance and Sketching

Friendship is also about sharing joys and hobbies. There were two best friends, Neeta and Sunita. Both were alike yet different. Both shared almost everything, studies, worries and passions. But Sunita was good at a dance while Neeta was reluctant to learn. It is often said that gloomy times brings families together. But lockdown during the pandemic has also proved that it brings friends closer and passions too.

As soon as the lockdown was announced in March 2020, both Neeta, Sunita and their classmates became upset after their teacher informed them about the closing down of their school. Initially, Rajasthan had announced the lockdown for two weeks. So children were hoping to return to school soon. But soon after the national lockdown was announced their hopes were shattered. Now they would have to wait longer to unite with their friends.

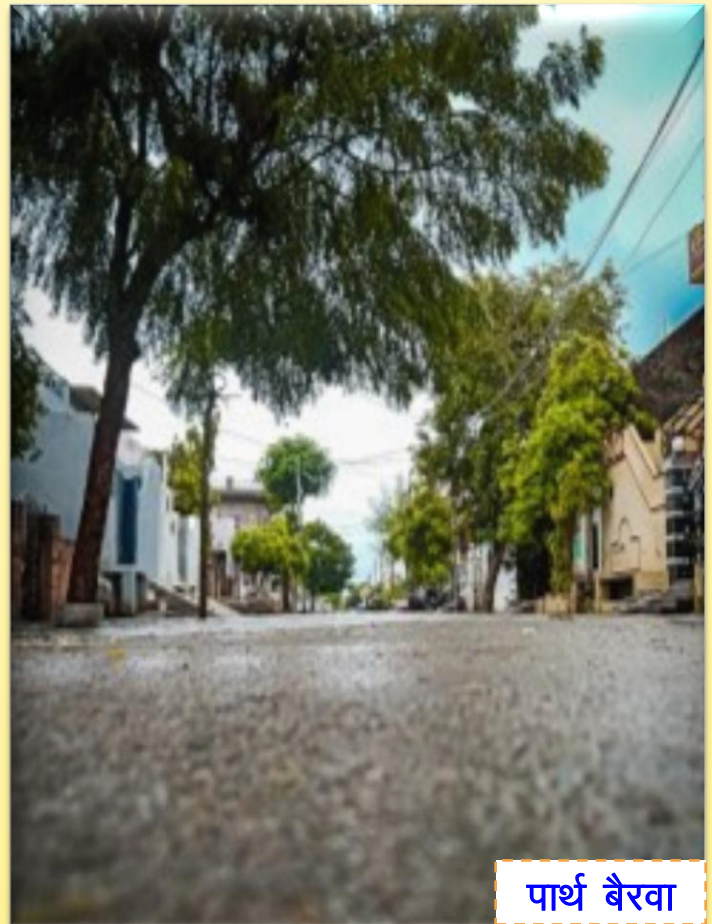
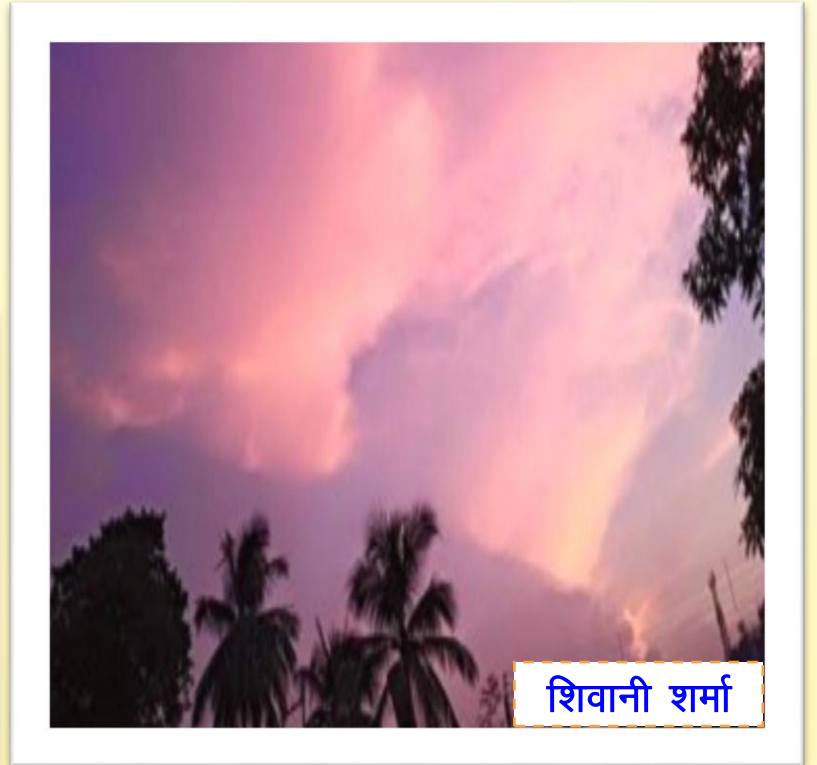
After spending few days in the lockdown Neeta started getting bored. She started missing Sunita and her other classmates. Staying at home was a new normal but she was unable to adjust. Suddenly she remembered wise words said by her English teacher, a day before the lockdown kicked off. The teacher had told the students to learn new art forms, skills, language, etc while being at home in the pandemic. She suddenly thought of learning Doodle dance from Sunita and Painting from another friend Rachna. She called them and took advice from them. And from the very next day, she started watching starting dedicating a few hours to these two new acquired hobbies. In a month she not only learnt two new skills but found ways of utilizing time more creatively.

Now Neeta makes her own videos of doodle dance and paintings which she regularly uploads on her youtube channel. Neeta is thankful to her friend's, teacher's, family and also the lockdown for bestowing her with two skills.

✍️ Tanushaka Bairwa, Class 10, Age 15 Years



कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा खींची गई तस्वीरें



दुनिया हँसती है



दुनिया कहती है कि दर्द नहीं है सीने में,
दर्द के पर्दा लगा रखा है क्योंकि मज़ा आ रहा जीने में।
पीछे से लोग क्या कहेंगे मुझे इसका डर नहीं,
आगे लोगों की बोलने की हिम्मत नहीं।

यही सच है कि ये देखकर दुनिया हँसती है।।

कितनी ही बाधाएं चाहे क्यूं ना आ जाये,
अपना लक्ष्य हम पाकर दिखाएंगे।
यही सच है की देखकर दुनिया हँसती है।।

डिंपल छीपा, कक्षा 10, उम्र 15 वर्ष



कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा खींची गई फोटो



तनुष्का



हीरा मेघवाल



सरोज गुर्जर



कोरोना के दौरान बच्चों के जीवन में सकारात्मक अनुभव

- गूगल-मीट और जूम एप या अन्य कुछ एप्लिकेशन के माध्यम से बहुत सारे लोगों के साथ जुड़ने का, स्कूली शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिला।
- दूर दराज रह रहे सोशल मीडिया के इस्तेमाल से अपने परिवार के लोगों से बातचीत कर पाये जैसे कि हम अपनी वास्तविक जीवन में लोगों के साथ करते हैं।
- मैंने कोरोनाकाल में ऑनलाईन पढ़ाई के जरिए हमारी स्मार्टल संस्था द्वारा नई-नई चीज नये-नये हुनर सीखे जैसे कि कविताएं लिखना, वीडियो के माध्यम से अपने-अपने साथियों एवं अन्य लोगों को पढ़ाना, क्राफ्ट करना, साइंस के प्रयोग करना, अपने आस-पास के लोगों का सर्वे करना, अच्छे-अच्छे चित्र बनाना आदि रचनात्मक क्रियाएं।
- कोरोना के कारण हम सभी का स्वच्छता पर अधिक ध्यान जाने लगा पहले हम सभी न तो बार-बार हाथ धोते थे और न ही हम सेनिटाइज़र का प्रयोग करते थे जबकि हमें स्वच्छता हमेशा ही अपनानी चाहिए। कोरोना के कारण हम सभी को अपने-अपने परिवारों के साथ समय बिताने को मिला।
- हमें स्वतंत्रता का महत्व भी समझ में आया कि जैसे हम इंसान हमारी खुशी के लिए पक्षियों को पिंजरों में कैद कर लेते हैं और उनसे उनकी आसमान में उड़ने की जो स्वतंत्रता है, उसे छीन लेते हैं तो उन्हें कैसा महसूस होता है। उन्हें भी वैसा ही महसूस होता होगा जैसा कि हमें आज घरों में रहकर महसूस हो रहा है। साथ ही साथ हम सभी में एकता का भाव भी पैदा हुआ कि हम सब मिलकर कोरोना को हराएंगे। इस दौरान हमने खाने का महत्व जाना, पैसे की बचत करना और मुश्किल समय में हालात से लड़ना सीखा।
- कोरोना काल से पहले हमारे पापा काम पर जाते थे जो हमारे उठने से पहले और हमारे सोने के बाद घर आते थे हम उनके साथ समय बिताना चाहते थे लेकिन बिता नहीं पाते थे। कोरोना काल में हम उनके साथ खेलते हैं वो हमें पढ़ाते और हम बहुत अच्छा समय बिता रहे।
- कोरोना के कारण शहर में सभी वाहन चलने बंद हो गये जिसके कारण हमारा वातावरण भी शुद्ध हो गया। यह पर्यावरण के लिए अच्छा हुआ है।
- कोरोना ने हमें सिखाया कि हमें लोगों की मदद करनी चाहिए जिन लोगों को उस समय दो वक्त का खाना नहीं मिल पा रहा था। उनके लिए हमने अपने यहां से खाना बना कर दिया और जो खुशी हमें उन्हें खाना खिलाने में हुई वह कभी भी नहीं हुई थी।

कोरोना के कारण बच्चों के जीवन में नकारात्मक प्रभाव

- कोरोना के कारण हम स्कूल से वंचित रहे और शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाये जिससे हमारी शिक्षा पर अत्यधिक बुरा असर पड़ा है। हमें हमारी परीक्षा परिणाम आने की खुशी महसूस करनी थी जो कि हम नहीं कर पाए।
- कोरोना वायरस ने हमारे अंदर कहीं ना कहीं नकारात्मक सोच, डर जैसी भावना पैदा कर दी थी। इसने इंसानों को इंसानों के संपर्क में आने का ही डर पैदा कर दिया।
- कोरोना के कारण हम सभी को अधिक से अधिक समय अपने कार्यों को करने के लिए फोन पर बिताना पड़ता है। जिस कारण मैं पिता के साथ समय नहीं बिता पाती।
- कोरोना के कारण महंगाई बढ़ी जिससे कि मध्यम वर्गीय परिवारों के लोगों के जीवन में भोजन, बेरोजगारी जैसी समस्याएं आईं।
- स्कूल नहीं खुलने के कारण हमें ऑनलाईन कक्षा पढ़नी पड़ती है। जिस कारण कई बच्चों की आंखे खराब हो रही हैं, चश्में लग रहे हैं। ऑनलाइन कक्षा में हमें अच्छे से समझ भी नहीं आता जिससे हमें अपनी गलतियों का पता नहीं चलता।
- स्कूल खुले होते तो हम अच्छे से पढ़ पाते और हमारी परीक्षा भी होती जिसके कारण हमें यह पता चलता कि हमें कितना समझ आता है और कितना नहीं आता और हम उसका सुधार कर पाते।
- मेरे पिता की नौकरी चली जाने के कारण घर में तनाव का माहौल बन गया था। पिता जी हमेशा परेशान और चिड़चिड़े रहने लगे जिस कारण मुझे व मेरे भाई बहनों को कई बातें सुनने को मिलती थी। इतनी परेशानी के बाद भी स्कूल में फीस जमा करानी पड़ रही थी। घर में इस बात पर बहुत बहस होती थी।
- कोरोना के कारण लोग घरों में से बाहर नहीं निकल रहे थे, तथा बाजार भी बन्द रहे थे ऐसे में जीव जंतुओं को खाने की कमी होने के कारण उनकी मृत्यु हो रही थी। लोगों के मन में सड़को पर घूमने वाले जानवरों के प्रति भी भय का माहौल बन गया था, लोगों को अपने आस पास कुत्तों को बैठने, खाना खिलाने और उन्हें खाना देने में डर लग रहा था कि कहीं उन्हें कुत्तों से बिमारी ना लग जाए।

कार्यशाला में जुड़ी सहयोगी संस्थाओं का परिचय

दशम

राजस्थान में स्वैच्छिक संगठनों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों और नागरिक समाज समूहों की एक पहल है। आम चुनाव 2018 के दौरान, अभियान ने दशम नामक एक गतिविधि का आयोजन किया। दशम कार्यक्रम के तहत बच्चों को एक साथ आने और राजनीतिक दलों से उनकी विकास संबंधी प्राथमिकताओं और अपेक्षाओं को परिभाषित करने के लिए एक मंच प्रदान किया। राज्य भर में अभियान की पहुंच बढ़ाने में दशम और उसकी सहयोगी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दशम ने संस्था के रूप में नेटवर्क को मजबूत करने में भी योगदान दिया है। ई-दशम महामारी के समय में दशम प्रक्रियाओं का विस्तार है।

जन चेतना संस्थान, आबू रोड

जन चेतना का गठन 1988 में सामाजिक कार्यकर्ताओं और मानव विकास के क्षेत्र में काम कर रहे समूह द्वारा किया गया था।

जन चेतना संस्थान राजस्थान के सिरोही जिले में आबू रोड, रेवदर, पिंडवाडा ब्लॉक के आदिवासी आबादी वाले गांवों में महिलाओं व किशोर-किशोरियों, समाज के वंचित और शोषित, दिव्यांग वर्ग के साथ उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, जल, जंगल, जमीन, भोजन, सरकारी योजनाओं से जोड़ना, क्षमता वर्धन, महिला लीडर तैयार कर संगठन निर्माण करना, सामाजिक अधिकारों/अभियानों के साथ जुड़कर अपने क्षेत्र में जन-जागृति व सशक्तिकरण का कार्य कर रहे हैं।

महिला जन विकास संस्थान, अजमेर

महिलाओं के नेतृत्व में, महिलाओं को मजबूत करने, किशोरी लड़कियों और बच्चों के सशक्तिकरण की दिशा में काम करने वाला एक महिला नेतृत्व और अधिकार-आधारित गैर-लाभकारी संगठन है। यह 2000 में, मध्य राजस्थान क्षेत्र में स्थापित, किया गया।

संगठन महिला अधिकार, बाल अधिकार सुरक्षा, संरक्षण स्वास्थ्य, पोषण कार्यक्रम, युवाओं की लामबंदी, किशोर लड़कियों की शिक्षा और क्षमता निर्माण, लिंग समानता, प्रारंभिक और बाल विवाह आदि विषयों पर सामाजिक चेतना लाने व परिवर्तन के लिए मोबिलाइजेशन करते हैं। साथ ही सूचना के प्रसार, के मुद्दे और डिजिटल कौशल विकास, आजीविका के मुद्दों पर कार्यरत हैं। संगठन कमजोर वर्ग समूहों के साथ काम करता है।

स्माइल संस्था, जयपुर

स्माइल संस्था 2003 से जयपुर में समाज के वंचित समूहों के लिए कार्यरत है। संस्था द्वारा जयपुर शहर में राजकीय बालिका गृह, महिला सदन व राजकीय किशोर गृह के साथ-साथ विभिन्न कच्ची बस्तियों व जिले के आस-पास के गावों में कार्यरत है। संस्था मुख्य रूप से किशोर-किशोरियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण, काउंसलिंग, शिक्षा एवं जीवन कौशल आदि प्रदान करने का कार्य कर रही है। 2014 से सरकारी विद्यालयों में पढने वाली बालिकाओं को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, जीवन कौशल व न्यूट्रीशियन देने का कार्य भी कर रही हैं इसके साथ ही साथ 2016 से लीडरशिप का प्रशिक्षण देने का कार्य कर रही है। जिससे कि उन बालिकाओं में तो सकारात्मक परिवर्तन, ऊर्जा, ताकत व आत्मविश्वास में वृद्धि हो ही रही है साथ ही समाज में भी वे सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं।

शिव शिक्षा समिति, रानोली

शिव शिक्षा समिति रानोली, एक पंजीकृत, गैर-सरकारी और गैर-लाभकारी संगठन है जो शिक्षित स्वस्थ एवं आत्मनिर्भर समाज के सपने को साकार करने का काम कर रही है। साथ ही महिलाओं और बच्चों पर विशेष ध्यान देने के साथ समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए काम कर रही है। संस्था 24 अक्टूबर 1989 को एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत किया गया था। युवा और उत्साही टीम का एक समूह जो समग्र विकास और समानता के लिए युवा और ग्राम स्तर के सामूहिक संगठनों का गठन करते हैं और मजबूत ज्ञान को शामिल करते हैं। वर्तमान में संस्था टोंक, बूंदी, सवाई माधोपुर, जयपुर, भीलवाड़ा जिलों में कार्यरत है।

उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू

उरमूल ट्रस्ट राजस्थान में रेगिस्तान के कमजोर और सीमांत वर्गों- महिलाओं और बच्चों पर ध्यान केंद्रित करते हुए इनके अस्तित्व और इसकी वास्तविकताओं को फिर से परिभाषित करने के साधनों और तरीकों का नवाचार कर रहा है। समाज में स्वास्थ्य, आजीविका, शिक्षा, शासन और वकालत के हस्तक्षेप के माध्यम से, उरमूल ट्रस्ट की स्थापना 1984 में की गई। उरमूल सीमान्त समिति बज्जू, ने 1987 में बज्जू ब्लाक में काम प्रारम्भ किया। वर्तमान में उरमूल ट्रस्ट में 12 संस्थाएं अलग-अलग जिलों में कार्य कर रही है। ट्रस्ट राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर, नागौर, चूरू, गंगानगर आदि जिलों में सक्रिय रूप से काम कर रहा है।



प्रतिभागी बच्चों के नामों की सूची

क्र. स.	बालिका का नाम	संस्था
1.	रुचिता प्रजापत	जन चेतना संस्थान, आबू रोड
2.	पार्थ बैरवा	जन चेतना संस्थान, आबू रोड
3.	तनुष्का	जन चेतना संस्थान, आबू रोड
4.	यशिका	जन चेतना संस्थान, आबू रोड
5.	ममता	जन चेतना संस्थान, आबू रोड
6.	अश्विन	महिला जन विकास संस्थान, अजमेर
7.	मेहर बानो	महिला जन विकास संस्थान, अजमेर
8.	प्रियंका मीणा	महिला जन विकास संस्थान, अजमेर
9.	पिंकी गुर्जर	महिला जन विकास संस्थान, अजमेर
10.	शीला बैरवा	महिला जन विकास संस्थान, अजमेर
11.	नन्दिनी वैष्णव	महिला जन विकास संस्थान, अजमेर
12.	गौरी सोनी	स्माईल, जयपुर
13.	टीना वर्मा	स्माईल, जयपुर
14.	शिवानी शर्मा	स्माईल, जयपुर
15.	संजीता प्रजापत	स्माईल, जयपुर
16.	सोनम कुशवाहा	स्माईल, जयपुर
17.	निधी साहू	स्माईल, जयपुर
18.	मिताली राज सोनी	स्माईल, जयपुर
19.	डिंपल छीपा	स्माईल, जयपुर

20.	तनु भास्कर	स्माईल, जयपुर
21.	हीरा मेघवाल	शिव शिक्षा समिति, रानोली टोंक
22.	रातीराम भील	शिव शिक्षा समिति, रानोली टोंक
23.	भवानी लाल	शिव शिक्षा समिति, रानोली टोंक
24.	संगीता मेघवाल	शिव शिक्षा समिति, रानोली टोंक
25.	दीक्षा प्रजापत	शिव शिक्षा समिति, रानोली टोंक
26.	मनीषा	शिव शिक्षा समिति, रानोली टोंक
27.	पूजा	शिव शिक्षा समिति, रानोली टोंक
28.	ललिता	उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू
29.	टीना	उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू
30.	अशोक कुमार	उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू
31.	राकेश	उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू
32.	जेठाराम	उरमूल सीमान्त समिति, बज्जू





unicef 
for every child

DASHA 
ALLIANCE FOR CHILD RIGHTS

RIHR
Resource Institute for Human Rights



राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान की पहल
“दशम एलाइंस”

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान
932, किसान मार्ग, बरकत नगर, टोंक रोड, जयपुर

Email ID – rihr.rajasthan@gmail.com

सम्पर्क-0141-3532799, 9460387130, 7878055137